Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
July-December 2023 4(2), 4068–4063

कक्षा नौ के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर घरेलू वातावरण के प्रभाव का अध्ययन (उत्तरी दिल्ली के चयनित माध्यमिक विद्यालयों के सन्दर्भ में)

रिंकी रानी[1], डॉ. कविता शर्मा[2]

[1]शोधार्थिनी, मंगलायतन विश्वविद्यालय, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश
[2]अस्सिटेट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, मंगलायतन विश्वविद्यालय, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश

Check for updates

DOI
10.29121/shodhkosh.v4.i2.2023.4607

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2023 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

ABSTRACT

अभिभावक की हमेशा अपेक्षा रहती है कि उसका बालक प्रत्येक क्षेत्र में नम्बर एक पर रहे। मनोवैज्ञानिकों एवं मनःचिकित्सकों के द्वारा किए गए अपने सर्वेक्षणों एवं अध्ययनों के आधार पर निष्कर्ष निकाला है कि अधिकांश स्थितियों में हीनता दोष के शिकार वही बच्चे होते हैं, जिन्हें बचपन में भरपूर लाड़–प्यार, स्नेह और आत्मीयता नही मिल पाती। मनोवैज्ञानिकों एवं मनःचिकित्सकों का माना है कि यदि बालकों को श्रेष्ठता की दिशा में प्रोत्साहित किया जा सके तो उनका आत्मविश्वास जागृत होता है। बालक की समस्या समाधान के लिए उसके परिवार के समुचित विकास, बेहतर समायोजन, उत्तम जीवन पद्धति तथा सुदृढ़ता मार्गदर्शन आवश्यक है। प्रशंसा पाकर बालक अपने से बड़ों का आदर करना सीखते हैं। माध्यमिक स्तर के छात्रों को योग्य बनाने का वास्तविक अर्थ उसे प्रगति शील और सभ्य बनाना है ताकि उसकी तर्क–शक्ति का विकास हो सके। परिवार का वातावरण किसी भी व्यक्ति के व्यवहार के मुख्य निर्धारक होते हैं। ये व्यक्ति के आन्तरिक जीवन का भाग होते हैं तथा उसके व्यवहार द्वारा परिलक्षित होते हैं। विभिन्न प्रकार के संस्कार जैसे धार्मिक, सैद्धान्तिक, नैसर्गिक आदि, व्यक्ति के व्यवहार में अभिप्रेरक बल की तरह कार्य करते हैं।

Keywords: घरेलू वातावरण, शैक्षिक उपलब्धि।

1. INTRODUCTION

शिक्षा अपने व्यापक अर्थ में, व्यक्तियों को अपने पर्यावरण के साथ प्रभावी ढंग से सामना करने में सक्षम बनाने के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण विकसित करने के लिए विकसित की गई एक प्रक्रिया है। इसका प्राथमिक उद्देश्य सभी लोगों के लिए पूर्ण व्यक्तिगत आत्मबोध को बढ़ावा देना है। यह सामान्य जीवन के लिए अपरिहार्य है। शिक्षा के बिना व्यक्ति सामूहिक जीवन के लिए अयोग्य साबित होता है।

घर का वातावरण – इस अध्ययन के प्रयोजन के लिए घरेलू वातावरण को सूची के माध्यम से मापा गया है जो घरेलू वातावरण के पांच आयामों को प्रदर्शित करता है –

i. भाषा उत्तेजना – भाषा उत्तेजना अंतःक्रिया रणनीतियों का एक नमूना है जिसका उपयोग छोटे बच्चों के लिए किया जा सकता है।

ii. भैतिक वातावरण – भौतिक वातावरण से तात्पर्य रखरखाव के स्तर, परिवेशीय शोर, प्रकाश व्यवस्था, अन्दर की वायु की गुणवत्ता और विशिष्ट क्षेत्रों के स्थयी संगठन से है।

iii. सामाजिक परिपक्वता को प्रोत्साहन – समाजिक परिपक्वता आज के युवाओं के लिए आवश्यक घटक है क्योंकि वे अधिक से अधिक आत्मकेंद्रित, स्वार्थी और प्रौद्योगिकियों पर निर्भर होते जा रहे हैं। उन्हें और अधिक सामाजिक होने की आवश्यकता है।

iv. उत्तेजना की विविधता –उत्तेजना आमतौर पर विकास की गतिविधि या प्रोत्साहन का कारण है।जो मातापिता अपने बच्चों को उत्साहवर्धक वातावरण प्रदान करते हैं वे जानते हैं कि यह उनके लिए महत्वपूर्ण है। वे अपने बच्चों को भलिभांति पहचान रहे हैं और बच्चे भी उन्हें भलिभांति पहचान रहे हैं।

v. मातृ मनोवृत्ति और अनुशासन– माताओं और उनके मातृ व्यवहार का उनके बच्चे के स्वास्थ्य और उनके चरित्र निर्माण पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ता है। परिणामों से पता चला कि मातृ दृष्टिकोण शिशुओं और बच्चों के प्रति आत्मविश्वास और भावनाओं सहित शिशु का स्वभाव और मातृ धारणाएं सकारात्मक रुप से संबंधित थें।

शैक्षिक उपलब्धि –सामान्य तौर पर शैक्षिक उपलब्धि शैक्षिक कार्य से संबंधित किसी विशिष्ट क्षेत्र में प्राप्त दक्षता की डिग्री या सफलता के स्तर को संदर्भित करती है। शैक्षिक उपलब्धि सिद्धांतों और सामान्यीकरणें के अधिग्रहण और दक्षता प्रदर्शन करने की क्षमता से संबंधित है। शैक्षिक प्रदर्शन का तात्पर्य स्कूल में प्रदर्शन के स्तर, उपलब्धि या स्कूल में सफलता से है। हालांकि शैक्षिक प्रदर्शन शैक्षिक विकास का मूल है। ट्रो (1956) ने शैक्षिक उपलब्धि को स्कूल के कार्यों में प्राप्त क्षमता या योग्यता की डिग्री के रुप में परिभाषित किया है, जिसे आमतौर पर मानकीकृत परीक्षण स्कोर द्वारा मापा जाता है और विद्यार्थियों के प्रदर्शन के व्यापक नमूने से प्राप्त मानदंडों के आधार पर ग्रेड या इकाइयों में व्यक्त किया जाता है। इस प्रकार शैक्षिक उपलब्धि वह क्षमता है, जो छात्र स्कूल के उन विषयों में दिखाते हैं जिनमें उन्होंने शिक्षा प्राप्त की है।

2. सम्बन्धित साहित्य के स्त्रोत (SOURCES OF RELATED LITERATURE)

सम्बन्धित साहित्य का अर्थ है कि शोध की समस्या से सम्बन्धित सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान–कोषो, पत्र–पत्रिकाओं, शोधप्रबन्धों और अभिलेखों से है जिनकी सहायता से शोधार्थी को समस्या के चयन करने में,परिकल्पना के निमार्ण में, शोध की दिशा तैयाार करने में एवं नई समस्या के समाधान की रूप रेखा तैयार करने में सहायता मिलती है। कुछ शोध समस्याएं निम्न लिखित है –

1. खान, ए. आर. (2020) बी. आर. ए. बिहार विश्वविद्यालय – शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर नियन्त्रण के बिन्दुपथ का प्रप्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन। शहरी एवं ग्रामीण दोनों ही परिवेश के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर नियन्त्रण बिन्दुपथ का प्रभाव पड़ता है। तुलनात्मक विश्लेषण से स्पष्ट हो जाता है कि शहरी परिवेश के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर नियन्त्रण के बिन्दुपथ का अत्यधिक प्रभाव पाया गया जबकि शहरी परिवेश की छात्राओं एवं ग्रामीण परिवेश की छात्र एवं छात्राओं पर नियन्त्रण के बिन्दुपथ का मध्यम प्रभाव पड़ता है।

2. राणा, रेखा, शिक्षा विभाग मेरठ कॉलिज. मेरठ (2020) – ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के आत्म– प्रत्यय तथा शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन। निष्कर्ष रूप मे कह सकते है कि ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की विमा आत्मविश्वास के मध्यमानों का अन्तर करने पर यह ज्ञात हुआ कि ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में शहरी विद्यार्थियों में अधिक आत्मविश्वास पाया गया।

3. कुमार, अरूण, शिक्षा विभाग, इग्नो वि.वि. अमरकटंक मध्यप्रदेश (2018) – शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि का तुलनात्मक अध्ययन – शहरी छात्रों की शैक्षिक रूचि उच्च स्तर पाई गयी है। शहरी किशोरों की भांति शहरी किशोरियों पर भी उनके वातावरण का प्रभाव होता है। इनकी रूचियों के निर्माण पर इनके पारिवारिक वातावरण व रहन–सहन तथा शहरीकरण का प्रभाव होता है। ग्रामीण किशोरों की रूचियों पर उनके पारिवारिक कार्यो का प्रभाव ज्यादा होता है।

3. शैक्षिक शोध की आवश्यकता (NEED OF THE EDUCATIONAL RESEARCH)

शिक्षा व्यक्ति को एक फूल की तरह विकसित करती है जो अपनी खुशबू पूरे वातावरण में फैलाती है। इस अर्थ में शिक्षा वह अनुकूल प्रक्रिया है जो व्यक्ति के व्यक्तित्व को उसके सभी पहलूओं में विकसित करके अंधकार, गरीबी और दुःख से बाहर निकालती है। जिस प्रकार एक ओर शिक्षा व्यक्ति के व्यक्तित्व को सभी क्षेत्रों में पूर्ण करने के लिए विकसित होती है, उसे बुद्धिमान बनाती

है, साहसी बनाती है तथा ठीक उसी प्रकार मजबूत अच्छे चरित्र का विकास करती है। अच्छे नागरिक के निर्माण के लिए शोध आवश्यक है।

पर्यावरण – पर्यावरण वास्तव में प्रकृति में वैश्विक है, इसमें सभी भैतिक व जैविक परिवेश और उनकी अंतःक्रियाएं शामिल हैं। दूसरे शब्दों में पर्यावरण जल, वायु, भूमि, मनुष्य और जीवित जीवों के आपस में अंतर्संबंधों का कुल योग माना जाता है। पर्यावरण का शाब्दिक अर्थ है परि एवं आवरण अर्थात हमारे चारों ओर प्रकृति द्वारा संचालित जीवों का जीवनचक्र के दौरान प्रभावित करने वाली प्रत्येक चीज को सामूहिक रुप से पर्यावरण कहा जाता है। जिसमें भौतिकी, भूविज्ञान, भूगोल, इतिहास, अर्थशास्त्र, शरीर विज्ञान, जैव प्रोद्योगिकी, भूभौतिकी, मृदा विज्ञान और जल विज्ञान आदि शामिल हैं। पर्यावरण अध्ययन, पर्यावरण को समझने की दिशा में दृष्टिकोण प्रदान करता है।

घर का वातावरण – घर का वातावरण लोगों के घरेलू जीवन के उन पहलुओं को संदर्भित करता है जो उनकी जीवन स्थितियों में योगदान करते हैं। घर, निवास या आश्रय आराम का स्थान है। यह आमतौर पर एक ऐसा स्थान होता है जहां कोई व्यक्ति या परिवार आराम कर सकता है और अपनी संपत्ति को एकत्र कर सकता है।

शोध अध्ययन का उद्देश्य **(NEED OF THE EDUCATIONAL RESEARCH)** –

1. कक्षा नौ के छात्र एवं छात्राओं के घरेलू वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. कक्षा नौ के छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि पर घरेलू वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।

4. शोध अध्ययन की परिकल्पना (NEED OF THE EDUCATIONAL RESEARCH) –

अध्ययन के लिए निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया –

1. कक्षा नौ के छात्र एवं छात्राओं के घरेलू वातावरण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. कक्षा नौ के छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है।

जनसंख्या **(POPULATION)** – प्रस्तुत अध्ययन हेतु उत्तरी दिल्ली के तीन स्कूलों के कक्षा नौ के 75 (25+25+25) छात्रों को यादृच्छिक विधि से चुना गया है।

चर **(variable) -** चर से तात्पर्य वस्तु, घटना तथा चीज के उन गुणों से होता है जिन्हें मापा जा सकता हैं।
मनोविज्ञान की भाषा में व्यवहार तथा व्यवहार को उद्दीप्त करने वाले सभी कारकों को 'चर' नाम दिया जाता है। मुख्य चर के रूप में माध्यमिक स्तर, शैक्षिक उपलब्धि व घर का वातावरण।

1. न्यादर्श का चयन **(SELECTION OF SAMPLE) -** शोध कार्य में न्यादर्श का विशेष महत्व होता है। इसके बिना शोध कार्य पूर्ण नहीं किया जा सकता है। न्यादर्श का तात्पर्य सम्पूर्ण अध्ययन के लिए ऐसे भाग को अलग करने से होता है जो सम्पूर्णता का प्रतिनिधित्व करता है और सम्पूर्णता की अपेक्षा छोटा होता है। चयनित विद्यालय से क्रमशः माध्यमिक स्तर के छात्रों का क्रमबद्ध विधि द्वारा चयन किया गया है। इस प्रकार कुल तीन माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के 80 छात्रों का चयन किया, जिसमें से अन्तिम रूप से पूर्ण शुद्ध व सही पाए 75 छात्र–छात्राओं के न्यादर्श को शोध अध्ययन हेतु चयनित किया गया जिनका विवरण निम्नलिखित है

विद्यालय एवं विद्यार्थियों की संख्या की विवरण सारणीं

क्र. स.	डाटा के लिये चयनित विद्यालयों का नाम	छात्रों की संख्या
1	सर्वोदय कन्या विद्यालय, अलीपुर दिल्ली।	25
2	राजकीय उच्चतम माध्यमिक कन्य विद्यालय, लिबासपुर दिल्ली।	25
3	सर्वोदय कन्या विद्यालय, बादली, दिल्ली।	25
	कुल छात्रों की संख्या	75

5. सांख्यिकीय तकनीक (STATISTICAL TECHNIQUES)

प्रस्तुत अध्ययन में माध्य, मानक विचलन, पियर्सन का सहसंबंध गुणांक और टी परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

उपकरण **(Tools)** – प्रस्तुत अध्ययन में शोधार्थी ने स्वयं निर्मित गृह पर्यावरण इन्वेंटरी का प्रयोग किया। शोधार्थी ने इन्वेंटरी का निर्माण में डॉ. प्रेरणा मोहित द्वारा निर्मित इन्वेंटरी को आधार आना है। वैधता एवं विश्वसनियता का परीक्षण एवं पुनःपरीक्षण द्वारा मापन किया गया। इसमें कुल 50 प्रश्न रखे गए जिनका उत्तर लिखित में नही देना था बल्कि हां या ना में टिक करना था।

परिकल्पना : 1 –कक्षा नौ के छात्र एवं छात्राओं के घरेलू वातावरण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका 2 :– कक्षा नौ के छात्र एवं छात्राओं के घरेलू वातावरण की तुलना।

Scores on Home Environment	N	Mean	SD	Table value At0.05 level of significance	Table value At 0.01 level of significance	Degree of Freedom	t' Value	Ho Accepted/ Rejected
Male	35	15	7.5	2.00	2.65	35+35-2 = 68	1.95	Accepted
Female	35	14.5						

विश्लेषण एवं व्याख्या : टी–मान ध्यान आकर्षित करता है कि परिकल्पना स0– 1 को 0.05 के साथ–साथ 0.01 के स्तर पर भी स्वीकार किया जाएगा क्योंकि गणना मूल्य 1.95 दोनों स्तरों पर मानक तालिका में दिए गए मान से कम है।

अतः परिकलपना को सत्य पाया गया जिसके आधार पर कह सकते कि छात्र एवं छात्राओं का घरेलू वातावरण में कोई सार्थक अन्तर नही होता है। घर के वातावरण में छात्र एवं छात्राओं से कोई वर्तमान समय में भेद–भाव नही किया जाता है। छात्र एवं छात्राओं दोनों पर समान रूप से घर का वातावरण प्रभाव डालता है।

परिकल्पना : 2 – कक्षा नौ के छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है।

तालिका 3:– कक्षा नौ के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि।

Scores on Academic Achievement	N	Mean	SD	Table value At 0.05 level of significance	Table value At 0.01 level of significance	Degree of Freedom	t' Value	Ho Accepted / Rejected
Male	35	78.8	77.06	2.00	2.65	35+35-2 = 68	1.96	Accepte d
Female	35	79.7						

विश्लेषण एवं व्याख्या : – टी–मान ध्यान आकर्षित करता है कि परिकल्पना सं0–2 को मानक सारणी के 0.05 स्तर के साथ–साथ 0.01 के स्तर पर भी स्वीकार किया जाएगा क्योंकि गणना के उपरान्त टी–मान 1.96 प्राप्त हुआ है जोकि मानक सारणी के दोनों स्तरों के मान से कम है।

अतः शोध के आधार पर निष्कर्ष निकलता है कि कक्षा नौ के छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है। छात्र अपना कार्य स्वयं करने की अपेक्षा कुछ हद तक माता–पिता या घर के अन्य सदस्यों पर निर्भरता को दर्शाता है जब कि छात्राएं अपना कार्य स्वयं करती है उसके उपरान्त भी शैक्षिक उपलब्धि में छात्रों से आगे ही पाई जाती है।

अध्ययन का परिसीमन **(DELIMITATION OF THE STUDY)** – अध्ययन केवल **उत्तरी दिल्ली के चयनित माध्यमिक विद्यालयों** के छात्र एवं छात्राओं तक ही सीमित किया गया है।

6. अभिभावकों के लिए सुझाव (Suggestions for future research) –

1. माता–पिता को घर के वातावरण में मानवीय मूल्यों को आवश्यक रूप से स्थान देना चाहिए ताकि बालक अपने दायित्वों को समझ सके।
2. अभिभावकों को बालक के लिए ऐसे वातावरण बनाना चाहिए जिससें छात्र में अपने कार्य स्वयं करने की आदत विकसित हो सकें।
3. शैक्षिक रूप से छात्र एवं छात्राओं को सुदृढ़ बनाने के लिए स्वयं से समाधान खोजने के लिए प्रेरित करना चाहिए।
4. छात्राओं को मानवीय मूल्यों से जुड़ी घटनाओं की चर्चा करनी चाहिए ताकि वे अपने व्यक्तित्व में सबके प्रति विनय का भाव बनाए रखें।

7. भावी शोध के लिए सुझाव (SUGGESTIONS FOR FUTURE RESEARCH) –

1. अध्ययन को अन्य स्तरों जैसे निम्न प्राथमिक, उच्च प्राथमिक और उच्चतर माध्यमिक तक बढ़ाया जा सकता है।
2. राज्य स्तर पर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर शहरी एवं ग्रामीण घरेलू वातावरण का अध्ययन किया जा सकता है।
3. बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि पर एकल और बड़े परिवारों के प्रभावों का अध्ययन किया जा सकता है।
4. कोरोना जैसी महामारी के दौरान छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर घरेलू वातावरण के प्रभाव पर भी अध्ययन किया जा सकता है।

8. निष्कर्ष (CONCLUSION) –

पियर्सन के सहसंबंध गुणांक से प्राप्त परिणामों के आधार पर यह स्पष्ट है कि घरेलू वातावरण और शैक्षिक उपलब्धि एक दूसरे से सहसंबंधित हैं, क्योंकि आर मान तालिका मान से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत कर दी गई है। टी–मानों से प्राप्त परिणामों के आधार पर यह स्पष्ट है कि पांचवीं कक्षा के छात्र एवं छात्राओं के घरेलू वातावरण और शैक्षिक उपलब्धि की तुलना अत्यधिक महत्वहीन थी क्योंकि टी–मान तालिका मान से कम है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत कर दी गई है।

CONFLICT OF INTERESTS

None.

ACKNOWLEDGMENTS

None.

सन्दर्भ सूची (REFERENCE) –

1. दुबे, भावेश चन्द (2011) – विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर शैक्षिक अभिप्रेरणा एवं समायोजन का प्रभाव, भारतीय आधुनिक शिक्षा, जनवरी 2010, पृष्ठ 91–94।
2. मो0 अली सलमानी (2012) – ''द इम्पेक्ट ऑफ लोकस ऑफ कन्ट्रोल ऑन लेग्वेंज एचिवमेंट, इटरनेशनल जर्नल ऑफ लेग्वेंज स्टडीज, भाग–06(2), पृष्ठ–123 से 135।
3. कुमार, सचिन (2014) – शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर अधिगम शैली का प्रभाव, एजुकेशनल साईस, रिव्यू, वाल्यूम–8, पृष्ठ–58 से 63।
4. कुमार, जगदीश (2015) – अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शिक्षा में बाधाएँ : एक अध्ययन, ''द जर्नल ऑफ एजुकेशन एण्ड इडियन परस्पेक्टिव, भाग–2, पृष्ठ–33 से 36।
5. देब, आमा एव ेनायर, सौम्य (2016) – रेल ऑफ लोकस ऑफ कन्ट्रोल इन एकेडमिक एचिवमेंट ऑफ साईस स्टूडेण्टस, इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एण्ड साईस मेंनेजमेंन्ट, भाग–6, पृष्ठ–416।
6. सिंह एवं बघेल (2017) – किशोरावस्था के विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन, इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिस्पिलनरी एजुकेशन एण्ड रिसर्च भाग–6, पृष्ठ–416।

7. गोयल, प्रतिभा एवं मिश्रा किरण (मई 2019) : माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों के आत्म–प्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन, इटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च पद सोशल साइन्सस।